B.A. Part I, History (Hons)

Paper – II, Unit – 6

TOPIC → Renaissance (पुनर्जागरण) का अर्थ?

Ans. → विश्व इतिहास में 14 वीं से 16 वीं शताब्दी तक का काल बहुत ही महत्वपूर्ण एवं युगांतकारी था। इसी इसी काल में यूरोप में ऐसी महान घटनाएँ घटी, जिनके प्रभाव से विश्व के इतिहास में एक नये युग का आगमन हुआ। मध्ययुग में सारे यूरोप के जनजीवन पर रोमन कैथोलिक चर्च तथा सामंतवादी व्यवस्था का व्यापक प्रभाव था। धार्मिक अंधविश्वास तथा अज्ञानता का सर्वत्र बोलबाला था। लोगों में स्वतंत्र विचार की प्रवृत्ति का सर्वथा अभाव था। लेकिन इस स्थिति के प्रति लोगों में एक नवीन विचारधारा प्रवाहित हुई। इस नवीन विचारधारा की अभिव्यक्ति पुर्नजागरण और धर्म सुधार आंदोलन के रूप में हुई।

सामंतवाद के पतन से यूरोप अंधकार युग से आधुनिक युग में प्रवेश किया। इस समय सामंती व्यवस्था बदल गयी, राजशक्ति सुदृढ़ हुई, व्यापार-वाणिज्य का विस्तार हुआ। नगर और आर्थिक संगठन अधिक प्रभावशाली बन गये, नई शिक्षा पद्धति का विकास हुआ, वैज्ञानिक और भौगोलिक खोजें हुई तथा कला और साहित्य का विकास हुआ। एक नई सोच उभरकर सामने आई। पांडित्यपंथी विचारधारा का स्थान मानवतावादी विचारधारा ने ले लिया। परिणामस्वरूप पुर्नजागरण हुआ। इन सांस्कृतिक परिवर्तनों को इंगित करने के लिए 19 वीं शताब्दी के इतिहासकारों ने रैनेसाँ अथवा पुर्नजागरण शब्द का व्यवहार किया है।

पुनर्जागरण का अर्थ → रैनेसाँ एक फ्रेंच शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ 'फिर से जागना' होता है। पुनर्जागरण का अर्थ उस बौद्धिक चेतना से लगाया गया है जिसके द्वारा यूरोपीय लोगों

Scanned with CamScanner

जो अपने स्वर्णिम अतीत को पुनरुज्जीवित करने का प्रयास किया और इसमें वे सफल भी रहे। विभिन्न विद्वानों ने पुनर्जागरण का अर्थ अपने-अपने मतानुसार लगाया है। पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में, "पुनर्जागरण वस्तुतः विद्या का पुनर्जन्म था, जिसमें कला, विज्ञान, साहित्य और यूरोपीय भाषाओं का विकास हुआ"। प्रसिद्ध इतिहासकार डेविस के अनुसार, "मध्ययुग में धर्म के ठेकेदारों ने मानव बुद्धि को गुलाम बना रखा था। मानव बुद्धि की उस बंधन से मुक्ति ही पुनर्जागरण है।" स्वैन का मानना है कि "पुनर्जागरण शब्द मध्ययुग के अंत और आधुनिक युग के प्रारम्भ के समस्त बौद्धिक परिवर्तनों के लिए समुच्चय बोधक है।"

पुनर्जागरण काल में, "विचारों, साहित्य और कला के क्षेत्र में यूनान और रोम से प्रेरणा लेकर एक ऐसे समाज की रचना मनुष्य ने शुरू की जिसमें यथास्थिति के प्रति मोह न हो। जहाँ मनुष्य अपने बंधनों को काट सके, समाज धर्मकेन्द्रित के स्थान पर मानव केन्द्रित बन सके, जिसमें व्यक्ति और उसकी समस्त संभावनाओं को उचित स्थान मिल सके। इसके फलस्वरूप लोगों की संचित शक्ति कई धाराओं में वेग से फूट पड़ी और जनसाधारण के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन हो गया। पुनर्जागरण सामंतवाद एवं ईसाई चर्च के विरुद्ध एक व्यापक विद्रोह था। इस प्रकार अंत में कहा जा सकता है कि प्राचीन यूरोप की प्रेरणा के आधार पर ही नये यूरोप के निर्माण के प्रारम्भ को पुनर्जागरण कहते हैं।

"The end"

Scanned with CamScanner